

मनुष्य ज़्यादा मांसाहारी हुए हैं

मनुष्यों के पोषण स्तर के एक विश्वव्यापी अध्ययन का निष्कर्ष है कि मनुष्य अब ज़्यादा मांस या जंतु-आधारित भोजन का उपभोग कर रहे हैं। इकोलॉजी की भाषा में कहें तो मनुष्य का पोषण स्तर 1961 से 2009 के बीच 3 प्रतिशत बढ़ा है। तो पहले यह देख लें कि पोषण स्तर से क्या तात्पर्य है।

इकोलॉजी में सारे जीवों को पोषण की एक शृंखला में रखकर देखा जाता है। इस शृंखला में सबसे पहले आते हैं पौधे और शैवाल जो अपना भोजन स्वयं बनाते हैं। इसे पोषण स्तर-1 कहते हैं। इसके बाद आते हैं खरगोश जैसे वे जीव जो पेड़-पौधों को खाते हैं। यह हुआ पोषण स्तर-2। इसके बाद लोमड़ी जैसे जीव पोषण स्तर-3 पर रखे जाते हैं जो अन्य शाकाहारियों को खाते हैं। पोषण स्तर-4 पर कौड़ जैसी मछलियां हैं जो अन्य मछलियों को खाती हैं। और सबसे ऊपर आते हैं सर्वोच्च शिकारी जो स्तनधारियों तक को खाते हैं मगर इन्हें खाने वाला कोई नहीं होता। ये पोषण स्तर 5.5 तक होते हैं।

तो मनुष्य इस शृंखला में कहां है? फ्रांसीसी समुद्र दोहन अनुसंधान संस्थान के सिल्वियन बॉनहोमो ने गणना की है कि 1999 में मनुष्य का पोषण स्तर मान 2.21 था। यह हमें लगभग शेष सर्वाहारियों के समकक्ष रखता है। इस लिहाज़ से हम मांसाहारियों की बजाय शाकाहारियों के ज़्यादा करीब हैं। हम सर्वोच्च शिकारी तो कदापि नहीं हैं।

बॉनहोमो के अध्ययन में इस बात पर भी ध्यान दिया गया था कि परिस्थिति में किस तरह के परिवर्तन आए हैं।

शोधकर्ताओं ने 176 देशों में खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा तैयार 102 किस्म के भोज्य पदार्थों की सूची के आधार पर 1961 से 1999 के बीच प्रति वर्ष भोजन खपत देखी और मानव पोषण स्तर की गणना की। निष्कर्ष है कि विश्व के स्तर पर मनुष्यों के पोषण स्तर मान में 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। और सबसे ज़्यादा वृद्धि भारत और चीन में मांस की खपत बढ़ने की वजह से हुई है।

मगर पोषण स्तर में यह परिवर्तन सारे देशों में एक-सा नहीं रहा है। भारत और चीन जैसे देशों में पहले भोजन मूलतः चावल आधारित था और आज उसमें जंतु-आधारित पदार्थों की मात्रा बढ़ी है। दूसरी ओर, आइसलैण्ड, मंगोलिया और मॉरिटैनिया जैसे देश हैं जहां पारंपरिक भोजन मांस, मछली और डेयरी उत्पादों से बनता था, उनका पोषण स्तर मान घटा है।

मानव पोषण स्तर मान की गणना करने से हमें इकोलॉजी में अपना स्थान तय करने में तो मदद मिलती ही है, इससे यह भी पता चलता है कि हमारा पर्यावरण पर क्या असर है। जैसे यदि कैलोरी के संदर्भ में गणना करें तो पता चलता है कि बराबर कैलोरी के लिए मांस उत्पादन का असर पर्यावरण पर कहीं ज़्यादा होता है। जैसे, खाद्य व कृषि संगठन की गणना दर्शाती है कि पशु उद्योग कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में से 18 प्रतिशत का ज़िम्मेदार है। इसका मतलब यह होता है कि यदि हमारा पोषण स्तर मान बढ़ रहा है तो ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन भी बढ़ेगा। (स्रोत फीचर्स)